Dr. Raj Gopal
V.S.J. College Rajnagar
Department of Philosophy.

Hetvabhas (Lecture-3)

हेत्वाभास (व्याख्यान-3)

(4.) असिद्ध :- जिस अनुमान में हेतु की यथार्थता सिद्ध न हो सके उसे असिद्ध हेतु कहते हैं। हेतु का प्रयोग साध्य को सिद्ध करने के लिए होता है। परन्तु साध्य से हेतु स्वयं असिद्ध हो जाये तो ऐसे हेतु को असिद्ध हेतु कहा जाता है। इसे साध्यसम हेतु भी कहा जाता है, क्योंकि साध्य के समान हेतु भी असिद्ध होता है। इसके तीन भेद होते हैं।

(i) आश्रयासिद्ध (ii) स्वरूपासिद्ध (iii) व्याप्यत्वासिद्ध

(i) आश्रयासिद्ध :- जिस अनुमान में आश्रय या पक्ष अस्तित्व होता है उसे आश्रयासिद्ध हेतु कहते हैं। इसमें पक्ष असत होने के कारण हेतु भी असिद्ध होता है। जैसे-

आकाशकुसुम सुगन्धित होता है,

क्योंकि यह एक कुसुम है, यथा कुसुम

इसमें आश्रय (आकाशकुसुम) असत होने के कारण हेतु (कुसुम) भी असिद्ध है। अतः यह आश्रयासिद्ध हेतु है।

(ii) स्वरूपासिद्ध हेतु :- इसमें आश्रय या पक्ष सत्य होता है। किन्तु हेतु अपनी प्रकृति के कारण उसमें असिद्ध होता है। जैसे -

शब्द नित्य है

क्योंकि वह चाक्षुष है, जैसे रूप।

Scanned with CamScanner

इसमें चाक्षुष होना हेतु स्वभावत: पक्ष (शब्द) में असिद्ध है, क्योंकि चाक्षुष होना कान का गुण न होकर आँख का गुण है। अत: इसे स्वरूपासिद्ध हेतु कहते हैं।

(iii) व्याप्यत्वासिद्ध हेतु :- जिस अनुमान में हेतु का साध्य के साथ व्याप्ति संबंध अप्रामाणिक हो उसे व्याप्यत्वासिद्ध हेतु कहते हैं। जैसे-

शब्द क्षणिक है,

क्योंकि वह सत् है और जो सत् है वह क्षणिक है।

जैसे - मेघ-समूह।

इसमें जो सत् है वह क्षणिक है - यह व्याप्तिवाक्य असिद्ध है। अत: यह व्याप्यत्वासिद्ध हेतु है।

(5.) बाधित हेतु :⇒ जिस अनुमान में हेतु अबाधित विषय नहीं होता उसे बाधित हेतु कहते हैं। इसमें हेतु द्वारा प्रतिपादित साध्य प्रत्यक्ष आदि प्रमाणों द्वारा बाधित होता है। दूसरे शब्दों में जब हेतु द्वारा सिद्ध साध्य दूसरे प्रमाणों से निश्चित रूप से खंडित हो जाये तो उसे बाधित हेत्वाभास कहते हैं। बाधित का शाब्दिक अर्थ 'खंडित' ही होता है। जैसे-

अग्नि शीतल है,

क्योंकि वह द्रव्य है, जैसे-जल,

यहाँ अग्नि की शीतलता का खंडन प्रत्यक्ष प्रमाण द्वारा हो रहा है। जब हम आग को स्पर्श करते हैं तो यह गर्म अनुभव होता है। अत: इसे बाधित हेतु कहते हैं। बाधित हेतु द्वारा स्थापित साध्य किसी अनुमानेतर प्रबलतर प्रमाण द्वारा खंडित होता है, वहीं सत्प्रतिपक्ष हेतु में हेतु द्वारा स्थापित साध्य उसके समान प्रतिद्वन्द्वी अन्य हेतु द्वारा खंडित होता है। इस प्रकार से सत्प्रतिपक्ष में एक अनुमान दूसरे अनुमान द्वारा खंडित होता है।

Scanned with CamScanner